शिक्षा के रूप (Forms of Education)

शिक्षक, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण - पद्धतियों की दृष्टि से शिक्षा के निम्नलिखित रूप हैं —

a) औपचारिक (नियमित) या तथा अनौपचारिक (अनियमित या) शिक्षा :-
(Formal and Informal Education)

औपचारिक शिक्षा का जन्म अनौपचारिक शिक्षा की अपूर्णता को पूर्ण करने के लिए हुआ। अतः औपचारिक शिक्षा उस शिक्षा को कहते हैं जिसमें बालक किसी कार्यक्रम के अनुसार नियंत्रित वातावरण में रहते हुए किसी पूर्व निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निश्चित पाठ्यक्रम (ज्ञान) को निश्चित शिक्षण-पद्धति के द्वारा निश्चित स्थान पर निश्चित समय में समाप्त करके परीक्षा देकर उपाधि ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार औपचारिक शिक्षा कृत्रिम होती है तथा इसके समस्त साधन सीमित होते हैं। ऐसी शिक्षा तथा को प्रदान करने का प्रमुख साधन तो स्कूल है, परन्तु पुस्तकालय, अजायबघर, चित्रभवन, प्रयोगशाला तथा पुस्तकें आदि भी औपचारिक शिक्षा के ही साधन माने जाते हैं।

- कार्यक्रम
- नि. वातावरण
- निश्चित उद्देश्य
- पाठ्यक्रम
- शिक्षण पद्धति
- स्थान
- समय पर
- परीक्षा

अनौपचारिक शिक्षा उस शिक्षा को कहते हैं जो आकस्मिक तथा स्वाभाविक होती है। इसमें

शिक्षा के अतिरिक्त किसी अन्य उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बनाया जाता है। इस शिक्षा में औपचारिक शिक्षा की भांति पहले से ~~की कुई~~ तैयारी की भी आवश्यकता नहीं होती। कभी-कभी तो सीखने और सिखाने वाले को यह भी पता नहीं चलता कि वह क्या सीख रहा है तथा उसे क्या सिखाया जा सकता रहा है। वस्तुस्थिति यह है कि अनौपचारिक शिक्षा का सम्बन्ध बालक के विकास से होता है। ऐसी शिक्षा को बालक परिवार, समाज, धर्म, फिल्म, नाटक, समाचार-पत्र, (जनसंचार के माध्यम, दल, युवक समूह तथा खेल के मैदानों आदि अनेक साधनों के द्वारा स्वतंत्र वातावरण में रहते हुए स्वाभाविक रूप से ग्रहण करके विकसित होता रहता है।

B) प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष शिक्षा
(Direct and Indirect Education)

इस शिक्षा में ~~जिसमें~~ शिक्षक और बालक एक दूसरे के आमने-सामने रहते हैं तथा शिक्षक जान बूझ कर पूर्व योजना के अनुसार किसी निश्चित योजना उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किसी निश्चित शिक्षा-पद्धति का अनुसरण करके बालक को निश्चित प्रकार का ज्ञान दे। ऐसी शिक्षा में औपचारिक साधनों का प्रयोग किया जाता है। संक्षेप में, जब बालक के समक्ष शिक्षक इस प्रकार का नियंत्रित

आज के समय में कक्षा का आकार छोटा रखने पर बल दिया जा रहा है।

वातावरण प्रस्तुत करे, जिसमें रहते हुए उसके चरित्र और व्यक्तित्व का बालक के ऊपर सीधा प्रभाव पड़े तो ऐसी शिक्षा को प्रत्यक्ष शिक्षा कहा जाता है।

अप्रत्यक्ष शिक्षा उस शिक्षा को कहते हैं जिसमें शिक्षा किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति हेतु किसी निश्चित शिक्षण-पद्धति के द्वारा नहीं दी जाती अपितु स्वतन्त्र वातावरण में अप्रत्यक्ष साधनों के द्वारा ~~ग्रहण किया जाता है~~ स्वयं ही संचालित होती रहती है। ऐसी शिक्षा को जिन साधनों द्वारा शिक्षा ग्रहण किया जाता है उसकी रचना किसी अन्य प्रयोजन से ही होती है, भले ही लोग ~~शिक्षा~~ उससे कुछ शिक्षा ग्रहण कर लें। जैसे- IGNOU, Distance Edu, उच्च स्तर पर- Radio, T.V, Internet (western), खेल का मैदान

c) सामान्य तथा विशिष्ट शिक्षा :
(General and Specific Education)

सामान्य शिक्षा को उदार शिक्षा भी कहते हैं। ऐसी शिक्षा का लक्ष्य सामान्य होता है तथा यह प्रत्येक बालक के लिए निश्चित स्तर तक सामान्य रूप से अनिवार्य होता है। सामान्य शिक्षा केवल बुद्धि को तीव्र करने के लिए दी जाती है जिससे बालक सामान्य जीवन के लिए तैयार हो सके।

जैसा कि मानवीय अधिकार घोषणा में या वर्णित है किया

गया है कि शिक्षा का प्रमुख कार्य माध्यमिक स्तर तक बालक को सामान्य शिक्षा प्रदान करना है और यही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य भी मानते हैं। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात सर्व शिक्षा को मुफ्त तथा आवश्यक बना दिया गया है।

विशिष्ट शिक्षा का लक्ष्य विशिष्ट होता है।। ऐसी शिक्षा विशिष्ट रुचि तथा योग्यता एवं क्षमता वाले बालक के लिए होती है। इसका उद्देश्य बालक को किसी विशिष्ट प्रकार का जीवन, व्यवसाय तकनीक ज्ञान या निश्चित कार्य के लिए तैयार करना होता है। इस शिक्षा को प्राप्त करने के बाद बालक जीवन के एक विशेष या निश्चित क्षेत्रों कार्य करने के लिए कुशल एवं सक्षम होने लगता है। इंजीनियर, डॉक्टर, वकील प्रबन्ध तथा एकाउन्टेंट की शिक्षा विशिष्ट शिक्षा के उदाहरण हैं।

Froebel
Kindergarten-1837
Santiniketan -1921

d) व्यक्तिगत तथा सामूहिक शिक्षा : (Individual and Collective Education)

वह शिक्षा, जो किसी बालक को दूसरे बालकों से अलग रखकर उसकी रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार प्रदान की जाय, व्यक्तिगत शिक्षा कहलाती है। इस शिक्षा का सम्बन्ध केवल एक बालक से होता है। शिक्षा देते समय इन बातों के अनुकूल ही शिक्षण-विधियों का प्रयोग किया जाता है। इस शिक्षा को प्राप्त करते समय बालक स्वतंत्रता का अनुभव करता है। चूंकि इस शिक्षा के अन्तर्गत बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है, इसलिए मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से ऐसी शिक्षा अत्यन्त लाभप्रद है।

प्राथमिक स्तर पर किंडरगार्टेन पद्धति मांटेसरी
पद्धति केन्द्र पर व्यक्तिगत ध्यान देते हैं की
उच्च पद्धतियाँ पर हैं।

सामूहिक शिक्षा उस शिक्षा को कहते हैं जिसके द्वारा बहुत से बालकों को एक ही स्थान (कक्षा) पर निश्चित विषयों का ज्ञान दी जाय। इस शिक्षा में बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों, प्रवृत्तियों, योग्यताओं और विभिन्नताओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिय जाता है। सामूहिक शिक्षा प्रदान करते समय शिक्षक को प्रखर तथा मन्द बुद्धि वाले बालकों की अवहेलना करके सामान्य बुद्धि के बालकों के साथ चलना पड़ता है। परन्तु इस शिक्षा में व्यय कम होता है, इसलिए आधुनिक स्कूलों तथा कॉलेजों में इसी शिक्षा को अपनाया जाता है।